RJPP, Vol. XXIV, No.I, Oct.25-Mar.26, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411
Impact Factor 8.873

भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में महात्मा गांधी की विचारधारा की प्रासंगिकता

रेखा
शोध छात्रा,
(इतिहास विभाग)
डॉ. के.एन. मोदी विश्वविद्यालय,
निवायी राजस्थान
ईमेलः rekhaphal902@gmail.com

डॉ. उत्कर्ष कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
(इतिहास विभाग)
डॉ. के.एन. मोदी महाविद्यालय,
निवायी राजस्थान

डॉ. प्रवीन कुमार
एम. ए. पीएच.डी यूजीसी–नेट
असिस्टेंट प्रोफेसर
(इतिहास विभाग)
दयाल सिंह कॉलेज, करनाल

सारांश

भारत सही मायने में लोकतांत्रिक देश है क्योंकि यहाँ बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। यहाँ लोग खुलकर और सीधे अपनी राय रख सकते हैं। एक तरह से लोकतंत्र समानता सुनिश्चित करता है। भारत में सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार किया जाता है और सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं। सही मायने में लोकतंत्र धर्म, रंग, जाति और पंथ के आधार पर भेदभाव नहीं करता है। हालांकि, ऐसे उदाहरण भी सामने आए हैं जब लोकतंत्र शब्द का दुरुपयोग किया गया है। इसका मुख्य कारण अज्ञानता है। देश चलाने वाली सरकार जनता द्वारा, जनता के लिए चुनी जाती है। वर्तमान लोकतंत्र में अत्यधिक केंद्रीकरण और असमानता व्याप्त है। गांधीवादी स्वशासन की अवधारणा, यानी स्वराज, वास्तविक लोकतंत्र है, जहाँ जनशक्ति व्यक्तियों में निहित होती है और प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को अपना स्वामी समझता है। ये मुद्दे आज भी स्वतंत्र भारत की पहचान और प्रतिनिधित्व के लिए प्रासंगिक हैं। आज चिंता का मुख्य कारण असहिष्णुता और घृणा है जो हिंसा को जन्म देती है, और यहीं पर गांधीजी के मूल्यों का पालन करने की आवश्यकता है, जिन पर इस लेख में विस्तार से चर्चा की गई है। वे केवल कल के हैं, न आज के, बल्कि सदा के लिए प्रासंगिक हैं।

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 20-02-26
Approved: 10-03-26

रेखा
डॉ. उत्कर्ष कुमार
डॉ. प्रवीन कुमार

भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में महात्मा गांधी की विचारधारा की प्रासंगिकता

RJPP Oct.25-Mar.26,
Vol. XXIV, No. I,
Article No. 20
Pg. 187-191

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-mar-2026-vol-xxiv-no1--270

https://doi.org/10.31995/rjpp.2026.v24i01.020

मैं लोकतंत्र को एक ऐसी व्यवस्था के रूप में समझता हूँ जो कमजोरों को भी ताकतवरों के समान अवसर प्रदान करती है।

– एमके गांधी

लोकतंत्र का अर्थः

''कोई भी मानवीय संस्था ऐसी नहीं है जो खतरों से अछूती न हो। संस्था जितनी बड़ी होगी, उसके दुरुपयोग की संभावना उतनी ही अधिक होगी। लोकतंत्र एक महान संस्था है और इसलिए इसके दुरुपयोग की संभावना भी बहुत अधिक है। अतः इसका उपाय लोकतंत्र से बचना नहीं, बल्कि दुरुपयोग की संभावना को न्यूनतम करना है।'' यंग इंडिया, 7 मई, 1931।

महात्मा गांधी के लोकतंत्र पर विचारः

1. गांधीवादी लोकतंत्र के लिए असाधारण चरित्रः– गांधीवादी विचारों को व्यवहार में लाना तब तक कठिन है, जब तक कि लोग असाधारण चरित्र, उच्च नैतिक क्षमता और ईमानदारी वाले न हों। वास्तव में, गांधीवादी दर्शन भारत में भी गहरी जड़ें नहीं जमा पाया। गांधी के अधिकांश अनुयायियों ने केवल दिखावटी समर्थन ही किया। लेकिन यह गांधीजी की विफलता या उनके विचारों की कमियों के कारण नहीं, बल्कि आम मनुष्य की खामियों और कमजोरियों के कारण था।

2. लोकतंत्र का भविष्यः– इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भविष्य के लिए गांधीवादी लोकतंत्र की अवधारणा ही एकमात्र आशा है, जहाँ इसे जमीनी स्तर पर लागू किया जाना चाहिए, दलीय व्यवस्था स्वीकृत सिद्धांतों पर आधारित होनी चाहिए न कि पक्षपातपूर्ण नीतियों पर, दल–बदल को समाप्त किया जाना चाहिए और अवज्ञाकारी प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का पालन किया जाना चाहिए। वर्तमान लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की खामियों और दोषों को दूर किया जाना चाहिए। लोकतंत्र को सुरक्षित बनाने के लिए जनता की शक्ति को स्वीकार किया जाना चाहिए; अन्यथा यदि लोकतंत्र का दुरुपयोग किया जाता है, तो जनता का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा।

3. मतदाताओं की योग्यताः– गांधीवादी लोकतंत्र में मतदाताओं की योग्यता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके सदस्य सीधे निर्वाचित होते हैं। मतदाताओं के पास शारीरिक श्रम करने की योग्यता होनी चाहिए, जिसकी महत्ता पर गांधीजी ने हमेशा जोर दिया था। ग्राम लोकतंत्र एक विकेंद्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था होगी।

4. विकेंद्रकरण और समानताः– वर्तमान लोकतंत्र में अत्यधिक केंद्रीकरण और असमानता है। राज्यविहीन लोकतंत्र में विकेंद्रीकरण और समानता होती है। गैर–पेशेवर और आजीविका के लिए श्रम करना समान का आदर्श होना चाहिए। राज्यविहीन लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता या योग्यता के अनुसार समाज की सेवा में स्वयं को समर्पित करने की अधिकतम स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

5. ग्राम अर्थव्यवस्थाः– गांधीजी अत्यधिक केंद्रीकृत उत्पादन के विरोधी थे और विकेंद्रीकृत उत्पादन के हिमायती थे। उनका उद्देश्य मशीनरी को पूरी तरह समाप्त करना नहीं था, बल्कि कुछ धनी लोगों के हाथों में सत्ता के केंद्रीकरण को रोकना था। उनका लक्ष्य ग्राम अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार द्वारा गरीबी उन्मूलन करना था। उन्होंने गहन, लघु पैमाने की, व्यक्तिगत और विविध कृषि तथा पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था पर जोर।

अवलोकनः

इससे पता चलता है कि लोकतंत्र को शासन का सर्वोत्तम रूप माना जाता है। साथ ही, यह सबसे कठिन रूप भी है और कुछ देशों में लोकतंत्र एक बड़ी सफलता साबित हुआ है, जबकि अन्य देशों में यह पूरी तरह विफल रहा है या अपंग की तरह चल रहा है। मैंने कहा है कि कोई भी शासन व्यवस्था अचानक महात्मा गांधी की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं चल सकती। अहिंसा तुरंत आचरण का हिस्सा नहीं बन सकती। लेकिन इस संदर्भ में महात्मा गांधी का सुझाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। फिर भी, शासन व्यवस्था को निश्चित रूप से इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अहिंसा सत्य, स्वाभाविक और भय की शत्रु है, समानता सहित शाश्वत मूल्यों में सर्वोच्च स्थान रखती है और निरंतर प्रगतिशील रही है। इसका उत्तम और महत्वपूर्ण उदाहरण मानव जाति की उत्पत्ति से लेकर आज तक इसके विकास के रूप में हमारे सामने हैं। हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि चाहे कितनी भी भिन्नताएँ हों, अंततः शांति की एक नवीन इच्छा बनी रहती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अहिंसा मानव स्वभाव में निहित है। वर्तमान में विश्व का एक बड़ा हिस्सा लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के अधीन है। सैद्धांतिक रूप से, यह प्रणाली अब तक की सर्वश्रेष्ठ प्रणाली है। यह सत्य है क्योंकि लोग हर स्तर पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इससे जुड़े हुए हैं। यह हमें प्रगति और विकास के अधिकतम अवसर प्रदान करता है। यदि हम इसका गहन अध्ययन करें, तो सर्वप्रथम यह पाते हैं कि नागरिकों का विकास असमान है। इसके बाद, हम पाते हैं कि ये राष्ट्र कमोबेश क्षेत्रीयता से ग्रस्त हैं। उन्हें भाषा संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे आतंकवाद और सांप्रदायिकता के चुंगल में हैं। इन राष्ट्रों में मानवाधिकारों का हनन भी एक गंभीर समस्या है। उपर्युक्त समस्याओं के समान कई अन्य समस्याएं भी हैं और जब तक ये समस्याएं बनी रहेंगी, शांति की कोई उम्मीद नहीं है। इन राष्ट्रों को इन समस्याओं से छुटकारा पाना चाहिए, सभी नागरिकों का समान विकास होना चाहिए और सांप्रदायिक सद्भाव स्थापित करना चाहिए ताकि सभी नागरिक प्रगति में सामूहिक और एकीकृत भागीदार बन सकें।

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली उपर्युक्त समस्याओं से मुक्त होनी चाहिए। इसे अपने सभी नागरिकों के समान विकास को सुनिश्चित करने में सक्षम होना चाहिए। संबंधित नागरिकों को विश्व शांति में योगदान देने के साथ–साथ एकजुट होकर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ना चाहिए।

उनकी अहिंसा की विचारधारा शायद सफल न हो, लेकिन यह संभावनाओं की एक नई दुनिया खोलती है और हमें लीक से हटकर सोचने के लिए प्रोत्साहित करती है। सत्य ओर अहिंसा केवल व्यक्तियों के लिए ही नहीं है, बल्कि इसे वैश्विक मामलों में भी लागू किया जा सकता है।

समानता और लोकतंत्र

गांधी के आर्थिक विचारों के समर्थन में खुले तौर पर सामने आने वाले पहले विदेशी अर्थशास्त्री जर्मन अर्थशास्त्री अर्नेस्ट शूमाकर थे। अपनी पुस्तक ''छोटा सुंदर है'' में उन्होंने गांधी को ''पीपुल्स इकोनॉमिस्ट'' के रूप में वर्णित किया है। गांधी के भव्य सिद्धांतों का संदेह उन्हें इक्कीसवीं शताब्दी के लिए प्रासंगिक बनाता है। ट्रस्टीशिप के उनके सिद्धांत ने ख़राब प्रतिक्रिया पैदा की लेकिन दो शीर्ष उद्योगपति जेआरडी टाटा और जमनालाल बजाज ने इसे अपनाया।

गांधी के लिए, कोई भी राजनीतिक प्रणाली अहिंसा और स्वतंत्रता देने में पर्याप्त रूप से सक्षम नहीं है, लेकिन सरकार की लोकतांत्रिक प्रणाली और एक न्यायसंगत सामाजिक व्यवस्था में लोगों को न्याय प्रदान करने की क्षमता है। उनके लिए लोकतंत्र केवल प्रक्रियात्मक नहीं है बल्कि वह है जो मूल है।

एक लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था का वास्तविक उद्देश्य यह है कि सबसे कमजोर को वही अवसर प्रदान किया जाए जो मजबूत को दिया जाता है। उन्होंने अपने आदर्श लोकतंत्र को उस गांव में स्थित किया जहां जीवन सरल था, शक्ति फैली हुई थी और अर्थव्यवस्था विकेंद्रीकृत थी (दुर्भाग्य से मेरे गांव ने तीनों को खो दिया है)। राजनीतिक व्यवस्था के लिए अहिंसा का अभ्यास करने का सबसे अच्छा तरीका अपेक्षाकृत निष्क्रिय होना है।

बापू के लिए वह राज्य सबसे अच्छा है जो कम से कम शासन करता है जो निश्चित रूप से 'न्यूनतम सरकार और अधिकतम शासन' से अलग है, समकालीन नव–उदारवाद के शब्दकोश से लिया गया एक कैचफ्रेज़। मतभेदों और संघर्षों को हल करने के लिए बातचीत की विधि में गांधी का दृढ़ विश्वास था।

निष्कर्ष

अंत में हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि गांधी जी का देश के प्रति दृष्टिकोण और संपूर्ण समाज के लिए उनके सपने आज भी भारत के लिए प्रासंगिक है। उन्होंने समुदाय को मानवता के सच्चे मूल्यों को आत्मसात करने और उन पर विचार करने के लिए प्रेरित किया, साथ ही उन्हें ऐसे कार्यों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जो व्यापक हित को बढ़ावा देते थे। ये मुद्दे आज भी स्वतंत्र भारत की पहचान और प्रतिनिधित्व के लिए प्रासंगिक हैं। आज चिंता का मुख्य कारण असहिष्णुता और घृणा है जो हिंसा को जन्म देती है, और यहीं पर गांधी जी के मूल्यों का और अधिक जोश के साथ पालन करने की आवश्यकता है। वे न केवल कल के हैं, न आज के, बल्कि सदा के लिए प्रासंगिक हैं।

संदर्भ

1. जय नारायण शर्मा, ''गांधीवादी अध्ययन का भारतीय समाज'', जर्नल ऑफ गांधीवादी अध्ययन, खंड 5, 2007।
2. कपूर, देवेश (2010): ''भारत में मध्यम वर्गः एक सामाजिक संरचना या राजनीतिक कर्ता'' जूलियन गो में।
3. श्रीधरन, ई (2008): ''उदारीकरण वाले भारत में मध्य वर्गों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था'', आईएसएएस वर्किंग पेपर।
4. चंद हुकम, आधुनिक भारत का इतिहास, अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड (2005)।
5. अमृत बाजार पत्रिका, 17 अगस्त, 1933 यंग इडिया,17 जुलाई, 1924 पृ01236
6. हरिजन सेवक (साप्ताहिक) 8 मई, 1937 (संपादक वियोगी हरि, दिल्ली, 1933.40)
7. महात्मा गाँधी का संदेश, संकलन और संपादक, यू0 एस0 मोहन राव,पृ0 23 प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, अक्टूबर, 1969
8. ब्राउन,जे.एम.(1991) गाँधी : आशा के कैदी, नया स्वर्ग, येल विश्वविद्यालय प्रेस।

9. अय्यर, आर.एन. (1993) महात्मा गाँधी के नैतिक और राजनीतिक विचार, ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. डाल्टन, डी. (1993) महात्मा गाँधीः क्रियाशील अहिंसक शक्ति, न्यूयॉकः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. नंदा, बी. आर. (1995) महात्मा गाँधीः एक जीवनी, दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. पारेख, बी. (2001) गाँधीः एक संक्षिप्त परिचय, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. हार्डीकैन, डी.(2003) गाँधी अपने समय में और हमारे समय मेंः उनके विचारों की वैश्विक विरासत, लंदनः हर्स्ट एंड कंपनी।
14. चटर्जी, पी. (1986) राष्ट्रवादी विचार और औपनिवेशिक विश्व, दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।